ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चे अभी जान गए हैं कि भक्ति और ज्ञान दोनों अलग चीज़ हैं। यह भी समझ गए हो भक्ति से दुगर्ति होती है ज़रूर; क्योंकि इतने जो गिरे हैं ज़रूर कोई तो कारण होगा ना। यह भी बाप बच्चों को बताते हैं। बच्चों को कुछ भी मालूम नहीं था। घोर–अंधियारे में थे। भक्ति मार्ग है घोर–अंधियारा। ज्ञान मार्ग है घोर–सोझरा। कलयुग में घोर–अंधियारा, सतयुग में घोर–सोझरा। यह भी अभी बाप ने बताया है। बच्चे यह भी समझते हैं ज्ञान को पढ़ाई, नॉलेज कहा जाता है। बच्चे जानते हैं कि भगवान राजयोग की पढ़ाई पढ़ाने वाला भी है; इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। शिवबाबा तो है ही निराकार। सबसे ऊँच ते ऊँच महिमा है ही निराकार की। वास्तव में निराकार तो तुम आत्माएं भी हो। जानते हो हम सभी निराकार शालीग्राम हैं। एक बाप के बच्चे भाई–भाई हैं। यह तो कोई भी कहेंगे हम भाई–2 हैं। एक बाप के बच्चे हैं। हम आत्माएं रहने वाले भी बाप के साथ हैं। उसको स्वीट सायलेंस होम कहा जाता है। अभी बच्चों को अपना घर पूरा याद है। इतने जो भी आत्माएं हैं सभी अपने घर में ही रहते हैं। फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं। यह तो सभी की बुद्धि में होना चाहिए। एक्टर्स हैं ना। तुम देखते हो रॉयल अच्छे–2 एक्टर्स पिछाड़ी कितना लट्टू हो पड़ते हैं। कितने लोग उनको देखने लिए जाते हैं। वह सभी हैं जिस्मानी। तुम हो रूहानी। जानते हो हम आत्मा हैं। यहां पार्ट बजाने आते हैं। पहले सुख का पार्ट फिर दुःख का पार्ट बजाते हैं। दुःख थोड़ा है। पिछाड़ी में दुःख होता है। आयु में छोटी होती है। भारत की आयु बहुत बड़ी थी। इतनी आयु और कोई खण्ड की नहीं गाई जाती, सिवाय भारते के। यह भी राजयोगी थे। अभी भोगी हैं। योगी और भोगी यह भारत में ही गाया जाता है। बच्चों को बुद्धि में है सारे विश्व में भारत ही था। नाम भी भारत खण्ड था। देवी–देवताओं का खण्ड था। और कोई थे नहीं। और सभी पीछे आए हैं। दुःख भी पीछे होता है। जब नई दुनियां पुरानी बनती है। यह तो बिल्कुल कॉमन बात है। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई बनती है। रिपीट होता है ना। हम देवता सो असुर, असुर सो देवता बनते हैं। रामराज्य सो रावण राज्य, रावण राज्य सो रामराज्य यह भारत की ही बात है। और कोई खण्ड के लिए यह बात नहीं है। उनको कहा ही जाता है कांटों का जंगल। फिर होगा फूलों का बग़ीचा। यह है आसुरी जंगल। वह है ईश्वरीय बग़ीचा। यह तो बहुत सहज (सम)झने की बातें हैं। दिन–प्रतिदिन सहज होना ही है ड्रामा प्लैन अनुसार। यह तो निश्चय है डीटी धर्म की स्थापना तो होनी ही है। चित्र में भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। नई दुनियां की स्थापना। तुम प्रदार्शनी आदि का उद्घाटन कराते हैं; क्योंकि नई चीज़ है। हमेशा नई चीज़ का उद्घाटन होता है। बाप भी नई दुनियां का उद्घाटन करते हैं। पुरानी दुनियां के लिए तो उद्घाटन नहीं करते हैं। नई चीज़ की स्थापना का मुहूर्त करते हैं। पुरानी चीज़ का मुहूर्त होता ही नहीं। व्यापारी लोग भी पुराना खाता छोड़ते हैं फिर नया रखते हैं। यह भी तुम्हारा नया खाता है, सुख का। दुःख का खाता चुक्तू होता है। यह है बेहद की बात। वह वर्ष–2 खाता चुक्तू करते हैं। यह तुम्हारा कल्प–2 नई दुनियां में नया खाता होता है। यह तो बहुत सहज है, अगर बच्चे पढ़ाई पर पूरा ध्यान दें तो। पढ़ाई पर बहुत अटेन्शन चाहिए। ऐसे भी नहीं हम जास्ती करते हैं। ड्रा(मा) अनुसार जितनी नूँध है वह होता है। भल कहा जाता है इनमें क्रोध है। इनमें तो कोई अक़्ल नहीं। यह कहा जाता है बाकी ड्रामा की नूँध। कहेंगे इनको धक्का खाने का शौक है। छी–2 संग में हैं। यह कहने में आता है। गायन भी है संग तारे कुसंग बोरे। तारे अर्थात् उस पार ले जावे। बाप सर्वशक्तिवान है ना। सेकण्ड में वर्ल्ड की सद्गति करते हैं। कितना सहज है। सेकण्ड में बाप की पहचान मिली। ओर जीवनमुक्ति मिली राजा भी जीवनमुक्ति तो प्रजा भी जीवनमुक्ति होगा। अभी नहीं है। तुम्हारे बुद्धि में बैठा है सतयुग में राजा–रानी, प्रजा सभी थे। हाईएस्ट और लॉएस्ट थे। राजा है तो रंक भी है; परन्तु वहां सभी सुख के वासी हैं। वह है डबल सिरताज। पवित्रता का ताज भी है। उनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। इसलि(ए) लाइट का

देते हैं। रावणराज्य में पवित्रता का ताज नहीं दिखाते हैं। यह ताज तुम्हारा कब उतरता है। रावण आकर पवित्रता का ताज उतार देते हैं। किसकी टोपी उतारी जाती है ना। तुम्हारी पवित्रता सारी ख़त्म हो जाती है। यह भी तुम जानते हो अपवित्र राजाएं पवित्र राजाओं को पूजते हैं। हरएक राजा के पास मन्दिर ज़रूर होता है। उनको भी पता नहीं पड़ता है कि हम सो पूज्य थे। हम सो फिर पुजारी बने हैं। तुमको पूरा मालूम हो गया। कैसे आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी बनते हैं। 84 जन्मों बाद ही पुजारी बनते हैं। हिसाब है ना पूरा–2। वह लोग, ओम, हम सो हम, अहम् ब्रह्मास्मि आदि का जो भी अर्थ करते हैं वह रॉंग। अनराइटियस भक्ति। राइटियस है ज्ञान। भक्ति में करेंगे कुछ भी वह बेसमझ से ही करेंगे; इसलिए गाया जाता है अंधे के औलाद अंधे। रावण को अंधा कहेंगे ना। इन ल.ना. को कोई वज़ीर आदि थोड़े ही होगा। फिर विकारी बनते हैं तो बुद्धि कम हो जाती है; इसलिए दूसरे की राय लेते हैं। यह करें वा न करें। यही राय लेंगे। इन्झों का राज्य तो चलता है इन्हों को थोड़े ही कोई राय देंगे। अभी तुमको राय, श्रीमत मिलती है। बाप श्रीमत अथवा राय देते हैं। तो तुम्हारा एडवाइज़र हुआ ना। बेहद का बाप एडवाइज़ करते हैं। कहते हैं, मैं तुमको बहुत अच्छी विचार, राय देता हूँ, महाराज बनाने लिए। ऐसे तो नहीं कहता हूँ, मैं भी महाराजा बनूँगा। नहीं। मीठे–2 बच्चों तुमको यह मत देकर इतना ऊँच बनाता हूँ। तो इस पर चलना चाहिए ना। इसमें ही मेहनत है। काम विकार को भगाना, भूतों को भगाना है। काम तो ऐसा भूत है, तोबा ; इसलिए कामी पुरुष को कामी कुत्ता भी (कहा) जाता है। बाप खुद बच्चों को कहते हैं बच्चे तुम कितने समझदार थे। हम तुमको फर्स्ट क्लास राय दे कितना ऊँच बना कर गए। यह भी ड्रामा अनुसार कहेंगे। इसमें ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ सकता। जो कुछ एक्ट चलती है, ड्रामा अनुसार। तुम अपनी राजधानी स्थापन न करो यह हो ही नहीं सकता। ड्रामा में नूँध है। तुम पुरुषार्थ करते हो यह भी ड्रामा कराती है। ड्रामा अनुसार तुम ज़रूर करेंगे। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ ज़रूर करावेगी। पुरुषार्थ बिगर तो कुछ मिल नहीं सकता। पानी भी नहीं पी सकते। पुरुषार्थ बिगर तो चल भी न सको। पांव भी उठा न सको। बाप बैठ कर राइट मार्ग पर पुरुषार्थ कराते हैं। राइटियस और अनराइटियस का खेल भी है। तुम जानते हो इस समय है अनराइटियस राज्य। इनके सारन्टी नहीं कहा जा सकता। यह तो पंचायती राज्य है। कितने पंच हैं। लोग सभा की पंचायती। फलाने सभा की पंचायती। इनको राजधानी नहीं कहा जाता। कहा ही जाता है प्रजा का प्रजा पर राज्य। अर्थात् कुरू, कौरव राज्य। तुमको बहुत कहते हैं, हमको कौरव क्यों कहते हो। अरे! यह तो गीता में भी है कौरव और पाण्डव क्या करत भये। महाभारी विनाश का भी लिखा हुआ है। फाइनल विनाश हो जाता है फिर सतयुग, त्रेता में आधा कल्प लड़ाई लगती ही नहीं। द्वापर में भी लड़ाई नहीं लगती लड़ाई भी मनुष्यों से , सिपाहियों से होती है। प्रजा का प्रजा साथ नहीं होती है। जब बहुत–बहुत वृद्धि हो, सिपाही आदि हो तब ही लड़ाई हो। आधा सुख आधा दुःख हो तो इसमें मज़ा ही क्या रहा। तुम सुख बहुत देखते हो। बाप ने नाटक दुःख के लिए थोड़े ही बनाया है। बाप कहते हैं, बच्चों तुम बहुत सुख देते हो। दुःख तो पिछाड़ी में होता है। तब तुम तमोप्रधान बन जाते हो, ड्रामा प्लैन अनुसार। सो भी नम्बरवार पार्ट सभी का अपना–2 है। मनुष्य पाप कितना करते हैं। क्या–2 करते हैं। अखबारों में भी पापों की बातें पड़ी रहती हैं। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में बैठता है। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जब तक हम बाप को याद न करेंगे, सो भी उठते–बैठते, चलते–फिरते। वह लोग तो कथाएँ आदि सुन कर फिर अपने धंधे–धोरी में लग जाते हैं। वह तो है भक्ति मार्ग। भक्ति का कितना विस्तार है। झाड़ के पत्ते ढेर होते हैं। यह तो बहुत छो(टा) झाड़ है। इनका बीज रूप है बाप। उनको कहा जाता है वृक्षपति। इनका बीज ऊपर में हैं। जब एकदम पूरा जड़–जड़ीभूत झाड़ हो जाता है तब फिर सैम्पलिंग लगाने बाप को आना पड़ता है। बाप खुद बतलाते हैं, मैं .... आता हूँ। कितने असुरों के वि(घ)न पड़ते हैं। अत्याचार होते हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। इस पर

निश्चय भी होना चाहिए ना। निश्चयबुद्धि बिगर राजाई कैसे स्थापन होगी। नम्बरवार ही निश्चय बुद्धि होते हैं। यह है ही दुःख की दुनियां। वहां तो डॉक्टर्स, हॉस्पिटल, जेलेखाने, बैरिस्टर आदि होते ही नहीं। बाकी फूल होंगे। फूल कब किसको दुःख नहीं देता। कांटे लग जाते हैं तो दुःख होता है। इनका तो नाम ही रखा है कांटों का जंगल। तुम किसको समझाते हो तो कितना माथा मारते हैं। बेहद का बाप से ज़रूर बेहद का वर्सा मिलेगा ना। उस समय अच्छा–2 भी करते हैं। अच्छा फिर हम आवेंगे। बस। फिर आवेंगे नहीं। फुर्सत नहीं। न साहूकार को फुर्सत है न ऑफिसरों को फुर्सत है। वह यह सब भूले कैसे। इसमें तो पुरानी दुनियां का सभी कुछ भूलना पड़ता है। उन्हों को तो बहुत धन है। कारखाने आदि हैं। वह कैसे उनको भूलेंगे। इतना अक़्ल आवेगा। बड़े आदमियों की बुद्धि में कब आ न सके। वह तो समझते हैं हम यहां स्वर्ग़ में बैठे हैं। विमान है, बिजलियाँ हैं, महल आदि सभी हैं। आगे यह थोड़े ही यह सभी थे; इसलिए बाप को ग़रीब निवाज़ कहा जाता है। आखिर वह दिन आता है ज़रूर। जबकि पुरानी दुनियां का विनाश हो नई दुनियां बनते हैं। गाते भी हैं, आखिर वह दिन आया आज, जिस दिन का रास्ता तकते थे। भक्ति मार्ग में क्या–2 करते थे। मुक्ति–जीवनमुक्ति के लिए कितना माथा मारते थे। अभी तुमको मिल जाती है तो फिर माथा मारने की दरकार ही नहीं। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग यह चक्र फिरता रहता है। सतयुग से लेकर दिन चली आती है। घंटे, मिनट, दिन सोमवार मंगल..... यह चली आती है; परन्तु तुमको तो जितना हो सकते टाइम लगाना है बाप की याद में। और कोई बातों (में) घुसना नहीं है। बाकी हाँ, हिसाब निकाल सकते हैं। एक दिन न मिले दूसरे दिन से। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। ड्रामा में देखते हो टिक–2 होती रहती है। चक्र फिरता रहता है। यह घड़ियाँ आदि भी ड्रामा अनुसार बनी हैं। वह टिक–2 है हद की। यह टिक–2 है बेहद की। तुमको बाप बेहद के ड्रामा की टिक–2 समझाते हैं। बहुत वण्डर खाते हैं। यह कैसे हो सकता है। पत्थर टूट कर मकान बना। फिर वही पहाड़ कैसे होंगे जो फिर मकान बनेंगे। इन बात(ों) में चले जाते हैं। बाप कहते हैं, मैं तो तुमको पावन होने की युक्ति बताने आया हूँ। तुम मुझे याद करो। कल्प–2 बाप यही युक्ति बताते हैं। समझाते हैं। तुम इन बातों का फ़िक्र नहीं करो। मुख्य फ़िक्र है पावन कैसे बने। रात–दिन यही धुन लगाते रहते हैं पतित–पावन..... अक्षर तो ठीक है। तुम सभी हो भक्तियां। ब्राइड्स। एक बाप ही ब्राइड ग्रुम है। सभी को सुखी बनाते हैं। रावण सभी को दुःख करते हैं। ब्राइड्स को बाप बहुत सुख देते हैं। यह है बेहद की बात। बेहद का दुःख पहला नम्बर है काम कटारी से हिंसा करना। यह तो समझते हो ना रावण्राज्य और रामराज्य है। रावणराज्य की आयु कोई बता न सके। रावण को जलाते रहते हैं। समझते कुछ भी नहीं। तुम जानते हो द्वापर से इनका राज्य शुरू हुआ है। यह सारे विश्व का दुश्मन है; इसलिए जब से भक्ति मार्ग शुरू होता है तब से उनको जलाते आते हैं, हर वर्ष। क्यों जलाते हैं, क्या किया है यह कब ख़्याल में नही आता। रावण क्या चीज़ है जो द(स) शीश देते हैं। फिर ऊपर में गदहे का सिर लगाते हैं। गधाई हो जाती है ना। कहां वह राजाई, कहां (यह) राजाई, कहां गुधाई। अभी तुम इन बातों को अच्छी रीत जानते हो। यहां से तुम घर जाते हो तो भी कितना फ़र्क पड़ जाता है। यहां तो बाबा डायरैक्ट पढ़ा रहे हैं। खुशी भी होती है। फिर भी ऐसे क्या(ों) कहते हो बाबा याद नहीं पड़ता। भूल जाते हैं। हद का बाप जो गटर में गिराते हैं उनको याद करते हो और बेहद का बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। लिखते हैं बाबा योग नहीं लगता। मैं कहता हूँ, अरे, बाप को याद न करेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा? लौकिक बाप के लिए तो कभी नहीं कहते कि भूल जाता हूँ। पारलौकिक बाप के लिए कहते हो, लज्जा नही आती। शर्म नहीं आता। विश्व का मालिक बनाने वाले को भूल जाते हो! यह भी माया है ना। ड्रामा में उनका भी फ़र्ज है तुमको भुलाना। ऐसे तो नहीं मल युद्ध में कोई अगर जबरदस्त है तो उस्ताद को कहेंगे यह हमको अँगुली न लगावे। रावण अपने सेना का उस्ताद है। यह अपनी सेना

का उस्ताद है। यह लेख बना हुआ है। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो। और यह चक्र भी तो बहुत सहज है। यह भूलने की तो बात ही नहीं। बेहद का बाप है सत्य। वह तो सत्य ही बताते हैं। तब तो सतयुग की स्थापना होती है। अनेक बार सच्च खण्ड स्थापना होती है। फिर भी झूठ खण्ड हो जाता है। अभी तो है ही झूठ खण्ड। झूठी माया.....गाते हैं ना। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारी संसार आ गया है। और किसको भी पता नहीं। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। और है भी बहुत सहज। ऐसे भी नहीं कोई जंगल में जाकर बैठना है। सभी बातें तुम बच्चों की बुद्धि में अच्छी रीत हैं। यह भी जानते हो यह नॉलेज बेहद का बाप ही देते हैं। जिसको भक्ति मार्ग में याद करते आए हैं। दुनियां नहीं जानती । हू बहू जैसे कल्प–2 आते हैं नम्बरवार, हू बहू ऐसे ही आवेंगे। भागेंगे ज़रूर। सारी राजधानी स्थापन हो जानी है। बाप बच्चों को गुल–2 बनाकर ले जाते हैं। सभी पवित्र ज़रूर बनना है। सभी का पार्ट अपना–2 है। यह खेल है। घर में तो ज़रूर पवित्र हो जावेंगे। हरेक को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। वह होता है हद का ड्रामा। तुम एकान्त में बैठ इन बातों पर विचार, मंथन करेंगे तो बहुत ही मज़ा आवेगा। हरेक आत्मा को अपना पार्ट है। वह भी अविनाशी है। आत्मा भी अविनाशी है। कितनी छोटी बिन्दी है। याद करना मुश्किल होता है। कितनी छोटी बिन्दी है। यह सभी समझने की बातें हैं ना। बाप किसको कहा जाता है, शालीग्राम किसको कहा जाता। तुम अभी समझते हो। यह भी कई भूल जाते हैं। बाप कहते हैं आज तुमको गुह्य बातें सुनाता हूँ। तो वह ..... पहले कैसे सुना देंगे? एक सेकण्ड में कोई सम्पूर्ण बनता है क्या। टाइम लगता है। बाप कहते हैं देह सहित भूल जाओ। इन आँखों से जो कुछ देखते हो यह भूल जाओ तो ग्रहण छूट जाए। इसमें कहां भी जाने करने की दरकार नहीं। वह सभी है हठ। बाप तो कहते हैं घर में ही बैठकर तुमको समझाता हूँ। यह भी समझते हो मौत सामने खड़ी है। बॉम्स ही ऐसे–2 बनाते हैं कल्प पहले भी यह हुआ था। यही समय था। मुफ्त में शंकर को विनाश के निमित्त बनाया है। सभी कायदे सिरे होता है। कोई चीज़ को आग लगती है वह भी कोई कारण से लगती है। मुफ्त में थोड़े ही लग सकती है। बाबा ने समझाया था जो सेन्सीबुल सयाणे हैं वह खुद समझते हैं यह हम मौत के लिए बना रहे हैं। बनाने सिवाय रह न सकें। उनको थोड़े ही पता है कि बाप आया हुआ है। ऐसे नहीं कि बाप प्रेरणा आदि करते हैं। बाप कैसे प्रेरणा करेंगे। यह ड्रामा में सारा नूँध है। बाप पर वा शंकर पर कोई दोष नहीं। यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। इसको कहा (जाता) है भावी। किसको भावी? ड्रामा की। ड्रामा को कोई भी नहीं जानते। यह बाप आकर समझाते हैं और फिर यह भी कहते हैं, बच्चे दैवी गुण धारण करो तब ही पावन बनेंगे। तुम पावन देवताओं की महिमा करते हो ना। पतित हैं तो बेगर हैं। इस समय है इनसॉलवेन्ट। इरिलीजियस। कुछ भी समझते नहीं। वर्ल्ड में पीस तो इनके राज्य में थी। सो फिर से अभी स्थापन हो रही है। आगे थोड़े ही ऐसे कहते थे। अभी सभी कहते रहते हैं शान्ति हो। शान्ति की प्राइज़ देते रहते हैं। होता कुछ भी नहीं। अभी तुम जानत हो बाप को हम याद करते हैं। जो जितना जास्ती कोई याद करेंगे उनको प्राइज़ मिलती है। विश्व की बादशाही बाप देते हैं। तुम सभी बाप के मददगार खुदाई ख़िदमतगार हो ना। तुम जातने हो हम सभी श्रीमत पर सारी विश्व की सर्विस करते हैं। जितना याद करेंगे उतना प्योर होते जावेंगे। और जितना पढ़ते हो राजाई मिलती है। अच्छा। फिर भी बाप कहते हैं मुझे याद करो और राजाई को याद करो। बेहद के बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। और सृष्टि चक्र को याद करने से राजाई मिलेगी। यह तो तुम्हारा काम है। कहां भी जाओ घूमो–फिरो कोई मना नहीं करते हैं। यह वशीकरण मंत्र है। माया पर विजय पाने का मंत्र। तो तुमको तिलक मिल जावेगा। यह है आ(त्मा) के लिए रूहानी भोजन। आत्मा सुनती है। आत्मा ही धारण करती है। शरीर को भोजन रोज़ मिलता है। रूह को भोजन सिर्फ़ एक ही बार संगम पर मिलता है। जिस(से) तुम सर्वशक्तिवान बन जाते हो। कोई राजाई छीन न सके। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग।